(1736) "शुन्भ भाषणे" I-भ्वादिः-433. सक. सेट्. पर.)

'—दीप्तौ हिंसने च' इति **वोपदेवः**। '—भासने' इति **दुर्गः**। '—भाषणे हिंसायां च' इति **क्षीरस्वामी**। एवं **देवमैत्रेयादयोऽपि**। 'शोभते शपि दीप्त्यर्थे शुम्भेरन्यत् तङः समम्।' (श्लो. 114) इति **देवः**। "**स्वामी** तु निरनुषङ्गं न पपाठ। इदमेव **आत्रेयस्यापि** मतम्; तुदादौ 'शोभत इति शपि' इति वचनात्। **दुर्गस्तु** भासने इत्यस्यार्थमाह। एवं **धनपालशाकटायनौ**। **गुप्तस्तु** 'सावष्टम्भनिषुम्भ(शुम्भ) संभ्रमनमद्-भूकोलम्' मालतीमाधवम् (5-22) इत्यादिदर्शनान्मूर्धन्यादित्वमाह" इति **माधवः**। शुम्भकः-म्भिका, शुम्भकः-म्भिका, शुशुम्भिषकः-षिका, शोशुभकः-भिका; इत्यादिकानि रूपाणि सर्वाण्यपि भौवादिक**कुञ्चति**वत् (222) ज्ञेयानि। इगुपधलक्षणकप्रत्यये कित्त्वादुपधानकारलोपे शुभः, 'स्फायितञ्चि—' (द. उ. 8-31) इत्यादिना रक्प्रत्यये नकारलोपे च शुभ्रम् इति च विशेषः।

(1737) "शुन्भ शोभार्थे"

(VI-तुदादिः-1322. अक. सेट्. पर.) **तृम्फादिः**।

'—हिंसायां च **द्रुमे**' इति **धा. का. व्याख्या** (2-75)। '—दीप्तौ हिंसने च' इति **वोपदेवः**।

'हिंसाभाषणयोः शोभेत् **शोभार्थे शुभतीति शे**॥' (श्लो. 143) इति **देवः**। सर्वाण्यपि रूपाणि भौवादिक**कुञ्चति**वत् (222) ऊह्यानि।

(1738) "शुभ भाषणे" (I-भ्वादिः-432. अक. सेट्. पर.)

क्षीरस्वामि-चन्द्र-जैन-कातन्त्र-हेमचन्द्रादयः न पठन्ति।

'**हिंसाभाषणयोः शोभेत्**, शोभार्थे शुभतीति शे॥' (श्लो. 143) इति **देवः**।

शोभकः-भिका, शोभकः-भिका, शुशुभिषकः-शुशोभिषकः-षिका, शोशुभकः-भिका;

शोभिता-त्री, शोभयिता-त्री, शुशुभिषिता-शुशोभिषिता-त्री, शोशुभिता-त्री; इत्यादिकानि रूपाणि सर्वाण्यपि दैवादिक**कुप्यति**वत् (224) ऊह्यानि। णिनिप्रत्यये शोभी[A] इति। शोभनः-शब्दार्थत्वप्रयुक्तयुच्प्रत्ययः।

A. 'द्विरदान् सिंहलेन्द्रस्य द्विचतुर्दन्तशोभिनः।' या. अ. 22. 190.